ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 3 | NOVEMBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

डॉ. जर्रा काझी के काव्य में अभिव्यक्त समाज

प्रा.डॉ. दिलीप कोंडीबा कसबे
हिंदी विभाग, विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला.

प्रस्तावना : -

साहित्य समाज का वह दर्पण है जिसमें क्रांति या परिवर्तन स्पष्ट रुप से दिखाई देता है | समाज को साहित्य सुयोग्य दिशा देता है | डॉ. जर्रा काझी हास्य-व्यंग्य साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर है | उन्होंने समाज से जुडी हर विसंगती को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से बहुत साल पहले उजागर किया है | समाज में पनप रही हर क्षेत्र की विसंगतीयों पर कलम चलाई है |

डॉ. काझी अ. सत्तार अ. गफ्फार जर्रा का जन्म २७ अगस्त, १९६५ को कलम जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) में हुआ | उनकी स्कुली शिक्षा कलम तहसिल में तथा महाविद्यालयीन पढाई जिला लातुर (महाराष्ट्र) में हुई तथा उच्च शिक्षा औरंगबाद के डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय में पूरी हुई | उनका जन्म गरीब घराने में हुआ है | उन्होंने प्रतिकुल परिस्थितियों में एम्.ए., एम्.फील्., पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की | ५१ साल की उम्र में दिल का दौरा आ जाने से उनकी मृत्यु हो गई |

● अभिव्यक्त समाज :-

समाज में व्याप्त विसंगतियों को शब्दों के माध्यम से कागज पर चितेरितकर उसको समाज के सामने लाया है | उन्होंने बहुत साल पहले ही अपनी कलम के माध्यम से निम्न जैसा तीखा प्रहार किया है-

१) नॉन - ग्रँट की अवस्था -

अनेकों के पास बडी-बडी डिग्रीयाँ होने के बावजूद भी एक-दो हजार की अनिश्चित तनख्वाह की आस में बेरोजगार युवक प्राध्यापक की नोकरी कर रहा है | यहाँ आर्थिक परिस्थिति के कारण शिक्षकों की जीने की चाह ही खत्म हो रही है | इस बात पर डॉ. जर्रा जी ने प्रकाश डाला है -

"मैने जो भूकंप से पूछा यार तुने मुझे क्यों नहीं मारा ?
भूकंप बोला, चूप ! हम तो जिंदो को मारते है ,
तुझे तो पहले ही नॉन - ग्रँट ने मारा ,
फिर हम कैसे मार सकते है, दुबारा |"[१]

आप जानते है, डॉ. जर्रा आम आदमी थे | वे आम आदमी की धडकन को पहचानते थे | अर्थात उन्होंने असंख्य नॉन - ग्रँट वालों की व्यथा-कथा प्रश्रुत की है | इस पर चारा निकले, ऐसा मुझे लगता है

२) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव -

पश्चिमी सभ्यता का असर, हम पर ये क्या हो रहा है | इन्सान अपनी संस्कृति खो रहा है| अब भी संभल जाओ नवजवानों वरना मौत सामने खडी है | जैसे -

"फ्रि सेक्स के बहाने,
मत खोना अपनी संस्कृति,
संभल जाओ , नौ- जवानों,
अगर अपनी नस्ल बचानी है,
वरना मौत एड्स बनकर खडी है |"[२]

इससे स्पष्ट है आज कल नई- नई बिमारियाँ हमारे यहाँ हंगामा मचा रही है | जैसा की एड्स, कोरोना आदियों के कारण संपूर्ण मानवी जीवन ध्वस्त होने जा रहा है, जिससे हमें बचना है, ऐसा लगता है | इसलिए हमें हमारी संस्कृति ही अपनानी है |

३) भ्रष्टाचार का प्रभाव -

आज हम समाज में चारो और भ्रष्टाचार को देख रहे है | जिसने खरेदनेकी क्षमता है उसके सामने हर चीज बिकाऊ है | ठगना इस बाजार का मूल्य बन गया है | रिश्वत लेना ही अधिकार बन गया है | जैसे ज्ञ

"जर्रा भ्रष्टाचार में ही है,
केवल इमानदारी,
याद रहे यहाँ,
बेईमानी न करे कभी |"[३]

यहाँ यह सच है कि विश्व में बेईमानी के कारण भ्रष्टाचार का बढावा, राजनीतिक, कृषि, नौकरी जैसे अनेक जगहों इसके रोकथाम होना जरुरी है | ये हर मनुष्य ने करना जरुरी है |

४) सांप्रदायिक दंगे -

आज मनुष्य अपना जीवन और भविष्य को महत्वकांक्षी नजरों से देखने लगा है | इसलिए आज भी समाज में जाति, धर्म के नाम पर दंगे हो रहे है | इसलिए जर्रा एक दुसरे के धर्म की इज्जत करने के लिए कहते है ज्ञ

"कोई कहता है - हिंदुओं ने मारा है,
कोई कहता है - मुसलमानों ने मारा |
चाहे कोई कुछ भी कहे,
इन्सान ने इन्सान को ही मारा |"[४]

यहाँ संक्षिप्त में हमारी सोच बदलनेसे ही हमारी तरक्की हो सकती है | सबसे उँचा धर्म तो 'मानवता' धर्म ही है, ऐसा मेरा मानना है |

५) दल बदलू नेता -

आज हम देख रहे है चारों ओर सन्माननीय नेताओं की लहर चल रही है | आज के नेता परिस्थिति के अनुसार गिरगिट जैसा रंग बदलते हुए दिखाई दे रहे है | उनकी कथनी और करनी में बहुत बडा अंतर दिखता है ज्ञ

"उनकी कथनी और करनी में,
जमीन - आसमान का अंतर है |
चाहे कुछ भी कहे,
लगते वे डार्विन के बंदर है |"[५]

यहाँ मेरा मानना है की, राजनीति में सत्ता पाना ही इन नेताओं का अंतिम लक्ष्य रहता है | इन दल बदलू नेताओं को जनता से कोई हमदर्दी नहीं है | इसलिए बडी सावधानी से वोटिंग कर देश जनता का हित जपना चाहिए ऐसा मुझे लगता है |

६) नवयुवकों को प्रेरणा -

आज का नौ-जवान बेकारी के कारण परेशाम हो गया है | क्योंकि बडी- बडी डिग्रीयाँ पास होने पर भी आज काल युवक बेकार है, बेरोजगार है | नौ-जवान को अपने जीवन में सफलता प्राप्त करनी है तो अपनी सोच बदलनी चाहिए | जैसे -

"तौबा नौवजवानों का हाल, फिल्मों का पिया प्याला |
जिनका कोई नही आदर्श, नौजवानों के आदर्श बन बैठे है |
हर घर बसी है 'वासना', आसु बहाती है 'मधुशाला' |"[६]

यहाँ स्पष्ट है, आज युवकों को मानसिक परिवर्तन पर बल देना होगा | मेहनत से ही अपनी तकदीर बदलनी होगी | संक्षिप्त में वासना पर काबू और वैचारिक पथ से चलना अनिवार्य है |

७) गुरु की महिमा -

गुरु के बिना हमारा जीवन ही अंध:कारमय है | गुरु ही हमें सही रास्ते पर चलने की सलाह देते है और हमको सही और गलत दोनों में अंतर समझने के लिए तैयार करते है | इसलिए भारतीय संस्कृति में गुरुपोर्णिमा का विशेष महत्व है | यह आध्यात्म जगत की सबसे बडी घटना के रुप में जाना जाता है | जो गुरु का सन्मान करते है, उन्हें यश की प्राप्ति होती है | जैसे ज्ञ

"गुरुजनों की क्षमताओं की, कुछ और ही होती है हाला |
बडे ही तकदीरवाले जिन्हें, मिलता उनका झुठा प्याला |"[७]

जैसे हमारे गुरु ही जीवन में भवसागर पार करने में नाविक का दायित्व निभाते है | किंतु आज गुरु का मूल्य कम हुआ- सा लगता है | स्पष्ट है गुरु का आदर करना सिखना चाहिए |

८) मँहगाई पर व्यंग्य -

हमारा देश कृषिप्रधान देश है | देश की पूरी अर्थव्यवस्था की वजह से कृषि अच्छी वर्षा पर निर्भर करती है | देश में अतिवृष्टि और अल्पवृष्टि के कारण अन्न की कमी हो रही है | समाज के व्यापारी और भ्रष्ट लोंगों के कारण मँहगाई बढ रही है | जैसे ज्ञ

"मँहगाई के इस दौर में कैसे, निखरेगा जीवन का प्याला ?
सारी खुशियाँ शिकुड गई, तंगी से पड गया पाला |"[८]

मँहगाई की समस्या हमारे सामने एक बडी गंभीर समस्या है | जिसके कारण असंख्य लोग रोजाना चिंताग्रस्त है | संक्षिप्त में सरकार, नेता मँहगाई पर लगाम लगाने में असमर्थ सिध्द है |

● सारांश :-

समाज ने विसंगतियाँ है | उनके खिलाफ डॉ. जर्रा की सोच एवं छटपटाहट देखने को मिलती है | आज समाज में अनेकानेक भ्रष्टाचार तथा अपराध देखने को मिलते है | इन अपराध तथा दुराचार का पर्दापाश करते हुए उन्हें समाज के सामने लाने का सच्चा प्रयास डॉ. जर्रा के साहित्य में देखने को मिलता है |

● संदर्भ सूची :-

१) डॉ. जर्रा - बे-दुम का बंदर, पृष्ठ - १
२) वही , पृष्ठ - ४, ५
३) डॉ. जर्रा - कलम का बलम, पृष्ठ - ५
४) वही, पृष्ठ - ६
५) डॉ. जर्रा - जर्रा की मधुशाला, पृष्ठ- २४
६) वही, पृष्ठ - २७
७) वही, पृष्ठ -४१
८) वही, पृष्ठ - ४९